व्याख्या सहित उत्तर

1. (a) जिस प्रकार (व) अग्नि का धर्म (य) दहकना है उसी प्रकार (ल) मनुष्य का धर्म (र) उसके स्वभाव का (6) पर्याय होना चाहिए।

2. (c) (1) फिर से मैं सोचने लगा – अतीत क्या चला ही गया (र) अपने पीछे क्या हम एक विशाल शून्य मरूभूमि छोड़ते जा रहे (व) आज जो कुछ हम कर रहे हैं, कल क्या यह सब लोप हो जाएगा (ल) कहाँ जाएगा वह ? (य) मैं किसी तरह विश्वास नहीं कर सका कि अतीत एकदम उठ गया है (6) मुझे क्षिप्रा की लोल तरंगों पर बैठे कालिदास स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं, अतीत कहीं गया नहीं है, वह मेरी रग-रग में सुप्त है।

3. (c) (1) भारतीय साहित्य का आदर्श त्याग और उत्सर्ग है (र) भारतीय स्वयं को उस समय कृतकार्य समझता है, जब वह मायाबंधन से मुक्त हो जाता है। (व) जब उसमें भोग और अधिकार का मोह नहीं रहता। (ल) यूरोप का कोई व्यक्ति लखपति होकर और ऊँची सोसायटी में मिलकर स्वयं को कृतकार्य समझता है। (य) किसी राष्ट्र की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति उसके साहित्यिक आदर्श होते हैं। (6) व्यास और बाल्मीकि के आदर्श आज भी भारत का सिर ऊँचा किये हुए हैं।

4. (c) (1) रामानुज के दर्शन में मुक्तात्मा - ईश्वर के समान है, पर उसकी ईश्वर के साथ एकात्मकता नहीं होती। (य) सृष्टि की स्थिति, लय आदि में जीव का तनिक का भी अधिकार नहीं रहता। (ल) मुक्त जीव में सर्वज्ञता तथा सत्य संकल्प अवश्य आ जाते हैं, पर सर्वकर्तृत्व ईश्वर के ही हाथ में रहता है। (र) मुक्ति के लिए ईश्वर का साक्षात् अनुभव ही अन्तिम साधन है। (व) प्रपति के वशीभूत भगवान् जीव को पूर्ण ज्ञान प्रदान कर देते हैं (6) बैकुण्ठ में भगवान् का किंकर बनना ही परम मुक्ति है।

5. (c) (1) कवि ब्रह्मानंद की इस रचना का प्रतिपाद्य समाज और राष्ट्र है। (ल) इसके अतिरिक्त नीति और दर्शन पर भी इसमें लेखनी चलाई गई है। (व) समाज में व्याप्त कुरीतियों पर कवि ने तीखे प्रहार किये हैं। (य) ऐसे अवसरों पर वे नीतिकार और समाज सुधारक के रूप गा में उभरकर सामने आते हैं। (र) गाँधी जी के सहयोगी होने के कारण इनके काव्य पर गाँधीवादी प्रभाव भी पड़ा है। (6) अहिंसा, सत्य और स्वदेश एवं स्वदेशी प्रेम से उनकी कविता ओत-प्रोत है।

6. (c) (1) शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर कहा गया है। ये दोनों ही अभिन्न हैं। (ल) अर्थ के बिना शब्द का कोई मूल्य नहीं है। (र) इसी प्रकार शब्द के बिना अर्थ का मानव-मस्तिष्क में कठिनाई से निर्वाह होता है। (व) शब्द और अर्थ की एकता को पार्वती परमेश्वर की एकता का उपमान बताकर कालिदास ने इस अटूट सम्बन्ध को महत्ता प्रदान की थी। (य) शब्द के साथ अर्थ का लगाव है और अर्थ के साथ शब्द का (6) एक के बिना दूसरे की पूर्णता नहीं, इसलिए दोनों मिलकर ही काव्य का शरीरत्व सम्पादित करते हैं।

7. (b) (1) संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना हमारे देश का प्राण है। (र) इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। (य) जहाँ उनमें सब तरह की विभिन्नताएँ है, वहाँ उन सब में यह एकता हैं। (व) बापू ने जनसाधरण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रांति के लिए तत्पर रहने के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। (ल) अहिंसा, सेवा और त्याग की बातों से जनसाधारण का हृदय इसलिए आन्दोलित हो उठा क्योंकि उन्हीं से तो वह शताब्दियों से प्रभावित और प्रेरित रहा। (6) जनसाधारण के हृदय में धड़कती चेतना की क्रांति की शक्ति बनाने में बापू की दूरदर्शिता थी और इसी में उनकी सफलता भी।

8. (b) (1) अनुभूति के द्वन्द्व ही से प्राणों के जीवन का आरंभ होता है। (व) उच्च प्राणी मनुष्य भी केवल एक जोड़ी अनुभूति लेकर संसार में आता हैं। (र) बच्चे के छोटे से हृदय में पहले सुख और दुःख की सामान्य अनुभूति भरने के लिए जगह होती है। (य) पेट का भरा या खाली रहना ही ऐसी अनुभूति के लिए पर्याप्त होता है। (ल) जीवन के आरम्भ में इन्हीं दोनों के चिह्न हँसना और रोना देखे जाते हैं। (6) पर ये अनुभूतियाँ बिल्कुल सामान्य रूप से रहती हैं; विशेष-विशेष विषयों की ओर विशेष-विशेष रूपों में ज्ञानपूर्वक उन्मुख नहीं होती।

9. (c) (1) जीवन में व्यक्ति को सच्चा सुख तब मिलता है जब हम अपना सर्वस्व दूसरों के लिए लुटा दें। (व) अपने लिए जीना भी कोई जीवन है (य) दूसरों के लिए जीने में ही सच्चा आनन्द और सुख मिलता है (र) किसी से कुछ पाने की इच्छा रखना मनुष्य रखना मनुष्य के लिए दुःखदायी है। (ल) यदि कोई आदमी पाने ही पाने की अपेक्षा रखता है तो उसे सुख नसीब नहीं होता। (6) कारण स्पष्ट है क्योंकि इचदा की पूर्ति किसी दूसरे पर निर्भर है।

10. (a) (1) मनुष्य स्वभावतः अनुकरणशील है (ल) अतः हमारे बच्चे अनुशासनशील हों, इसके लिऐ आवश्यक है कि हम स्वयं भी अनुशासित हों। (र) यदि अपने माता-पिता, भाई आदि का आदर करेंगे तो हमारे हमारे बच्चे भी हमारा आदर करेंगे। (व) यदि हमारा व्यवहार अन्यों के प्रति शिष्ट होगा तो हमारे बच्चे भी उनके प्रति शिष्ट रहेंगे। (य) बच्चों को अनुशासन की शिक्षा पुस्तकों से नहीं, अपने बड़ो के व्यवहार से मिलती है। (6) अगर बच्चे के माँ-बाप, उनके पास-पड़ोस के व्यक्ति अनुशासित हों तो बच्चे भी अनुशासित ही होंगे।

11. (c) (1) प्रातःकाल प्रकृति की शोभा निराली होती है। (ल) सूर्य की सुनहरी किरणों के पड़ने से धरा से आकाश तक प्रत्येक वस्तु सुनहरी-सी लगने लगती है। (य) हरी-भरी घास पर ओस की बूंदें ऐसी प्रतीत होती हैं मानो सुन्दर चमकीले मोती हों। (व) पेड़ों की चोटियों को छूती हुई सूर्य की किरणें अद्‌भुत शोभा प्रदान करती है। (र) पर्वत शिखर स्वर्ण रेखा से खचित प्रतित होते हैं। (6) चारों ओर एक स्वर्णिम आभा, एक अलौकिक दृश्य दिखाई देता है।

12. (c) (1) वृन्दावन लाल वर्मा ने अपने उपन्यासों में नारी को ऊँचा स्थान प्रदान किया है। (र) नारी की नवनीत जैसी कोमलता और व्रज जैसीकठोरता, दोनों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। (व) 'मृगनयनी' में नायिका निन्नी का चरित्र अपूर्व साहसिक और सदाचारपूर्ण है। (ल) गौण पात्रों में कुमुद

का आन्तरिक प्रेम अतुलनीय है। (य) उसमें लाखी की एकनिष्ठा, देशभक्ति तथा प्रेम की पवित्रता भी अनुकरणीय है। (6) अन्य नारी पात्रों में भी लेखक ने आदर्श का समन्वय किया है।

13. (a) (1) आज हिन्दी को प्रत्येक क्षेत्र में सम्मान प्राप्त है (व) उच्चस्तरीय हिन्दी अध्यापन की व्यवस्था के साथ ही शोध संस्थान भी गतिशील है। (र) समस्त विश्व के विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग खुल चुके हैं। (ल) हिन्दी भाषा ओर साहित्य को समस्त विश्व में प्रतिष्ठित करने वाले प्रशासनिक माध्यम कार्यरत हैं। (य) न जाने कितनी समितियाँ और अकादमियाँ सक्रिय हैं। (6) फिर भी हिन्दी को वह सर्वोच्च स्थान प्राप्त नहीं है जो उसका सहज प्राप्य है।

14. (d) (1) हमारे देश के साहित्यशास्त्रियों ने 'कला के लिए कला' की समस्या को व्यापक रूप से देखा था। (य) उनकी शास्त्रीय समीक्षा की पुस्तकों में ऐसा ही व्यापक विचार देखने को मिलता है। (व) पश्चिम में इसे लेकर बहुत सी व्यर्थ की खींचतान हुई है। (ल) किन्तु तथ्य इतना ही है कि वस्तु रूप में कलाओं का प्रत्यक्षीकरण करते हुए आचार आदि के प्रश्न वास्तव में अन्तर्निहित हो जाते हैं। (र) इसका यह आशय कदापि नहीं है कि कला का आचार से कोई सम्बन्ध नहीं। (6) आशय यही है कि कला सम्बन्धी शास्त्र आचार सम्बन्धी शास्त्रा से भिन्न है।

15. (c) (1) आदिलशाही राज्य में अनेक लब्धप्रतिष्ठ कवि हुए हैं। (य) इस काल का महत्त्व दक्खिनी हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक है (ल) आदिलशाही सुल्तानों ने स्वयं भी काव्य रचना की थी। (र) इब्राहिम आदिलशाल द्वितीय इस काल के एक प्रमुख कवि थे। (व) उनकी रचना 'नवरस' हिन्दी साहित्य की अमूलय निधि है। (6) इसकी भाषा छंद, अलंकार आदि रीतिकालीन कवियों की याद दिलाते हैं।